Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 03/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

<u>नैदानिक मनोविज्ञान का क्षेत्र</u> **(Scope of Clinical Psychology) :**

प्रत्येक विज्ञान का एक निश्चित क्षेत्र या विषय विस्तार होता है जिससे विभिन्न दिशाओं एवं क्षेत्रों में उसके कार्य एवं उपयोगिता का पता चलता है। एक प्रयुक्त शाखा के रूप में नैदानिक मनोविज्ञान का विकास अन्य मनोविज्ञान की अपेक्षा अधिक तेजी से हुई है। इन दोनों नैदानिक मनोविज्ञान एक पैसा रूप में विकसित हुआ है इसके क्षेत्र का अनुमान नैदानिक मनोवैज्ञानिकों
द्वारा किये गये विभिन्न स्तर के कार्यों की समीक्षा से होता है। इस दिशा में गारफिल्ड एवं कुर्ज (Garfield and Kurtz, 1976) तथा नौरकोस एवं प्रोचास्का (Norcross & Prochaska, 1982) द्वारा किये गये सर्वे कार्य उल्लेखीनय हैं। इन्होंने नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के एक ऐसे समूह का चयन किया जो अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (American Psychological Association या APA के विभाग 12 (Division 12) अर्थात् नैदानिक मनोविज्ञान के विभाग (Division of clinical psychology) सदस्य थे। प्रत्येक को एक प्रश्नावली डाक द्वारा भेजी गयी जिसमें उन्हें एक नैदानिक मनोविज्ञान के प्रमुख कार्य क्षेत्रों (Scope) का उल्लेख करना था। सर्वे में करीब 800 नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने उस प्रश्नावली को भर कर लौटाया। इसी तरह नोरक्रोस तथा प्रोचास्का ने नैदानिक मनोविज्ञान के प्रमुख कार्य क्षेत्रों का वर्णन एक प्रश्नावली में दिये गये प्रश्नों के उत्तर के रूप में किया। इन अध्ययनों के आलोक में फेयर्स (Phares, 1984) ने नैदानिक मनोविज्ञान के निम्न कार्य क्षेत्रों का उल्लेख किया है-

<u>(i) मनश्चिकित्सा (Psychotherapy):</u> मनोश्चिकित्सा नैदानिक मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्रों में प्रमुख स्थान रखता है। लगभग 80% नैदानिक मनोवैज्ञानिक मनोचिकित्सा कार्य में लगे हैं। मनोचिकित्सा नैदानिक मनोविज्ञान में उपयोग की जानेवाली एक प्रमुख विधि है जिसके द्वारा रोगों का निदान एवं उपचार संभव होता है। मनोचिकित्सा के अनेक प्रकार या प्रविधियाँ हैं जिनमें मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic theraphy) क्लायर केन्द्रित चिकित्सा (client centrad therapy) व्यवहार चिकित्सा (behaviour therapy), समूह चिकित्सा (group therapy) रैसनल इमोख चिकित्सा (rational emotive therapy) आदि प्रमुख हैं। डेरिक (Herink, 1980) के अनुसार चिकित्सा के लगभग 250 विभिन्न प्रकार हैं जिनका उपयोग नैदानिक मनोवैज्ञानिक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अवश्य करते हैं। मनोचिकित्सा वैयक्तिक और सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। इस चिकित्सा की कोई निश्चित अवधि नहीं होती। कुछ रोगी मात्र दो-तीन माह में ही लाभान्वित हो जाते हैं तो कुछ रोगी को साल साल भर लग जाते हैं। मनोचिकित्सा का यह कार्य रोगी को चिकित्सालय में रखकर या चिकित्सक अपने आवास पर रोगी को बुलाकर कर सकता है। मनोचिकित्सा का स्वरूप सुधारक (remedial) होता है जिसका उद्देश्य रोगी के वर्तमान समस्या का समाधान करना होता है। कुछ मनोचिकित्सा का स्वरूप निरोधक (Preventive) भी होता है जिसका उद्देश्य व्यक्ति में संवैगात्मक एवं अभियोजनात्मक समस्या को उत्पन्न होने से रोकना होता है। आज नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की पहचान आम जनता में एक मनोचिकित्सक के रूप में ही होती है।

(**ii)** निदान एवं मूल्यांकन **(Diagnosis and Assessment**): रोग का निदान एवं मूल्यांकन नैदानिक मनोविज्ञान का दूसरा प्रमुख कार्यक्षेत्र है जिसमें लगभग 73.8% नैदानिक मनोवैज्ञानिक कार्यरत हैं। निदान का अर्थ रोगी में निरीक्षित गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर उसकी असमान्यता के लक्षणों एवं वर्गीकरण (classification) की पहचान करने से है। विलियमसन (Williamson, 1950) के अनुसार, निदान व्यक्ति की समस्याओं, उसके कारणों एवं अन्य महत्त्वपूर्ण गुणों का एक संक्षिप्त शारांश होता है जिसमें समायोजन तथा कुसमायोजन करने की अन्तःशक्ति का आशय भी होता है। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के बारे में विभिन्न तरह की सूचनाओं को एकत्रित किया जाता है जिसका उद्देश्य समस्या का समाधान करना होता है। मूल्यांकन के लिए नैदानिक मनोवैज्ञानिक निदान की विधियों, प्रेक्षण (observation) साक्षात्कार (Interview) व्यक्ति इतिहास लेखन विधि (case history method) तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग करते हैं।

(**iii)** शिक्षण **(Teaching**): शिक्षण नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख कार्यक्षेत्र है जिनमें लगभग 61.7% नैदानिक मनोवैज्ञानिक पूर्णकालिक एवं अंशकालिक रूप से शिक्षण कार्य का सम्पादन करते हैं। इसके अन्तर्गत नैदानिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण कार्य (testing) नैदानिक साक्षात्कार (clinical interview) मनोचिकित्सा (psycho therapy) व्यक्तित्व सिद्धान्त (personality theory) प्रयोगात्मक नैदानिक मनोविज्ञान (experimental clinical psychology) आदि विषयों का शिक्षण करते हैं। शिक्षण अधिकतर भाषण विधि पर आधारित होता है परंतु यह एक प्रकार कर पर्यवेक्षणात्मक पर भी कार्य किये जाते हैं। कभी-कभी नैदानिक मनोवैज्ञानिक समुदाया में जाकर विभिन्न विषयों पर पुलिस पदाधिकारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, प्रोवेसन पदाधिकारियों के कार्यशाला (workshop) भी चलाते हैं। इस तरह नैदानिक मनोवैज्ञानिक शिक्षण के क्षेत्र में विभिन्न स्तर से कार्य करते हैं और समाज को लाभान्वित करते हैं।

(iv) शोध **(Research**): शोध नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आता है। शोध से नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में नित नवीन सिद्धान्तों, प्रविधियों आदि की स्थापना एवं निर्माण होता है। करीब 52.7% नैदानिक मनोवैज्ञानिक शोध कार्य में लिप्त हैं। शोध के माध्यम से नैदानिक मनोवैज्ञानिक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में नया ज्ञान प्राप्त करते हैं। इनके शोध अधिकतर व्यक्तित्व सिद्धान्त, मूल्यांकन प्रविधियों का विकास एवं वैश्वीकरण (Validation) चिकित्सा प्रविधियों का मूल्यांकन (Evaluation of therapeutic techniques) के क्षेत्र में होते हैं। इन शोधों का प्रकाशन प्रमुख रूप में जनरल ऑफ कन्सरिंग एजु क्लिनीकल सायकोलोजी (Journal of consulting and clinical psychology) सायकोलोजिक एसेसमेन्ट (psychological assessment) तथा जनरल ऑफ एबनॉरमल सायकोलोजी (Journal of Abnormal Psychology) में प्रकाशित किया जाता है। भारत में भी विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में नैदानिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे मनोविज्ञान की इस शाखा में नवीन पद्धति एवं सिद्धान्त उभर कर आवे ताकि व्यक्ति की सांवैगिक समस्याओं को समझने एवं उपचार करने में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को अधिक-से-अधिक मदद मिल सके।

(**v)** परामर्श **(Consultation**): परामर्श भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख कार्यक्षेत्र है जिसमें करीब 67.4% नैदानिक मनोवैज्ञानिक इस कार्य को विशेष महत्त्व देते हैं। परामर्श कार्य अधिकतर शिक्षण कार्य से संबंधित होता है। परामर्श वहा प्रक्रिया है जिसमें नैदानिक मनोवैज्ञानिक अपने ज्ञान एवं कौशल के आधार पर दूसरे व्यक्ति को कुछ विशेष प्रकार की सूचना देकर उसकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास करता है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को कई तरह के परामर्श कार्य करने होते हैं। औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था को एवं अपने सहकर्मियों तथा अन्य एजेन्सियों को वे परामर्श देते हैं। किसी औद्योगिक या व्यावसायिक संस्था में नैदानिक परामर्शदाता (clinical consultants) संस्था के कार्यपालकों (executives) को प्रेरित करने के उपायों पक राय देने को कहा जा सकता है। उसी तरह किसी संगठन की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए परामर्श देने को कहा जा सकत है। परामर्श का स्वरूप कभी तो सुधारक (remedial) होता है और कभी निरोधक (preventive) होता है। कुछ नैदानिक परामर्शदाता की सेवा को अर्धकालीन आधार पर तथा कुछ की सेवा को पूर्णकालीक आधार पर कभी-कभी

उपयुक्त धन खर्च करक प्राप्त किया जाता है। इस संबंध में D फेयर्स (Phares, 1983) ने ठीक ही कहा है कि "परामर्श चाहे जिस परिस्थिति में दी गर्य हो या चाहे जो भी इसका विशेष उद्देश्य हो, आज यह बहुत नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए एक सार्थक कार्य बन गया है।"

(6)प्रशासन एवं प्रबंधन **(Administration and Management**) प्रशासन एवं प्रबंधन कार्य भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के कार्य क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्र में दिन प्रतिदिन के कार्य के अलावे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य जिसमें फाइल् देखना तथा उचित निर्देश आदि कार्य सम्पादित करना होता है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों से प्रशासनिक कार्य कराने के पीछे यह तक दिया जाता है कि उनमें संवेदनशीलता, अन्त्तवैयक्तिक कौशल तथा शोधसुविज्ञता (research expertise) आदि अधिक होता है मनोविज्ञान विभग का अध्यक्ष, प्रशिक्षण कार्यक्रम का निर्देशक (director) छात्र परामर्श केन्द्र (student consulting centre का निर्देशक, स्कूल तंत्र का अधीक्षक (superintendent) किसी अस्पताल या उपचार केन्द्र का मुख्य मनोवैज्ञानिक, सामुदायिक